द्वारा लिखित स्व. डॉ. विजय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:52 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 14:58

"आओ हम यहोवा के लिए ऊंचे स्वर से गाएं, अपने उद्धार की चट्टान का जय जयकार करें।" भजन संहिता 95:1

फ्लेन्डर्स की लड़ाई का प्रथम दौर था, रात्रि का गहन अंधकार था, युद्ध क्षेत्र में सन्नाटा था, अचानक मध्य रात्रि में जर्मन तोपें गरजने लगीं, गोले ब्रिटिश खाईयों पर गिरने लगे, ब्रिटिश बन्दूकों ने भी जवाब में गोलियां चलाईं, घण्टों बन्दूकों तोपों की गरज वातावरण में व्याप्त रहीं और साथ में मृत्यु की चीखें — धीरे धीरे सब कुछ शांत हो गया, मृत्यु की नीरवता भी छा गई और फिर प्रात: की प्रथम किरणें अन्धकार के साम्राज्य को मिटाने लगीं, और फिर एक आवाज़ आई, बिल्कुल भिन्न आवाज़ — मृत्यु की नीरवता को भंग करती, कहीं ऊपर एक लार्क पंछी गाने लगा, रात्रि के कोलाहल के पश्चात् जब प्रात: की किरणें आईं तो ऊंचे आकाश में उसने उड़ान भरी कि ऊगते सूर्य के दर्शन हो जाएं और अपने गीत से उसने नये दिन का शुभ संदेश खाइयों में घुसी युद्ध ग्रसित मानवता को सुना दिया।

इस घृणा, तनाव, भय, शंका और पापमय कोलाहल से ग्रसित, अंधकार में डूबी मानवता को भी गीत और संगीत के द्वारा शुभ संदेश देना कितना आवश्यक है, यह सत्य मसीहियों ने जाना है।

मिडिइंडिया क्रिश्चियन सर्विसेज़ द्वारा प्रकाशित गीतों की पुस्तक, 'जीवन संगीत' की प्रस्तावना में लिखा है —
"गीत मसीही जीवन का अभिन्न अंग हैं। आनन्द और महिमा के गीत, कृतज्ञता और धन्यवाद के गीत, क्लेश और उत्पीड़न में सम्बल और दृढ़ता प्रदान करने के लिए विश्वास के गीत,
सभी मसीही आराधना की उच्चतम अभिव्यक्ति प्रतिबिम्बित करते हैं। सदियों पुराने गीत मसीही परम्परा
निर्मित करते और आराधना की मन:स्थिति विकसित करते, नये शब्दों एवं नये संगीत में पुराने विश्वास को अभिव्यक्त करते, गीत जो बालक उल्लास से गाते —

युवा मन को आन्दोलित करने वाले गीत वृद्ध विश्वास को अभिव्यक्त करने वाले गीत, जो क्षितिज के उस पार तक दृष्टि रखते हैं मसीही जीवन ऐसे गीतों से भरपूर जीवन है।"

वाणी ईश्वर का एक अद्भुत वरदान है — भाषा भी — और गीत उस वाणी की उच्चतम मधुरतम अभिव्यक्ति का एक प्रमुख भाग है, जैसे हमें ईश्वर के वरदान वाणी का उपयोग उसके लिए और मानवता के लिए करना चाहिए वैसे ही गीत और संगीत का उपयोग भी मानव की आत्मा को ईश्वरीय इच्छा के अनुरूप विकसित होने को प्रेरित करने के लिए करना चाहिए।
किसी ने कहा है,

"किसी सुन्दर धर्म गीत में ऐसा कुछ होता है जो मानव हृदय को आंदोलित कर जाता है, जो उसकी आत्मा की इतनी गहराईयों में उतर जाता है जहां मात्र प्रचार नहीं पहुंचता।"

उस गीत के संगीत से कहीं अधिक, उस गीत की कविता से कहीं अधिक, परमेश्वर की आत्मा उसके द्वारा सक्रिय हो जाती है जिससे गीत को एक दिव्य शक्ति उपलब्ध होती है।

इसलिए इन दिव्य गीतों के लिए धन्यवाद देते हैं तुझे परमेश्वर हम बार–बार उन्हें गाएं हम कब्र के अंधकार से आत्माओं को बचाएं।

जी हां हम गीत गाएं। प्रचार गूंजे पर गीत भी अवश्य गूंजें। हर मसीही परिवार में पारिवारिक प्रार्थना हो पर साथ में गीत अवश्य गाएं, इससे अच्छी गवाही हम क्या दे सकते हैं?

हमारे गीत पहुंचेंगे दूर तक और जो उनके दायरे में आएगा उस तक हमारी गवाही पहुंचेगी। गीत, हमारे विश्वास की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। भजन संहिता 96:1 में लिखा है –

परमेश्वर के लिए नया गीत गाओ
95:1 में लिखा है –

परमेश्वर के लिए ऊंचे स्वर में गाओ 101:1 में लिखा है –

उसकी करूणा के वर्णन के गीत गाओ उसके न्याय के विषय में गाओ, 98:8 में लिखा है –

सृष्टि गाए नदियां तालियां बजाएं पर्वत मिलकर जय–जयकार करें 100:4 में लिखा है –

उसके फाटकों से धन्यवाद और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो। गीत –

हमारे विश्वास को कृतज्ञता को, आनंद को आशा को प्रगट करें जो प्रभु यीशु मसीह में हमें है।
बेजान गीत –

हमारी क्लीसिया के बासी जीवन को प्रगट करते हैं, जिन्दा जीवंत गीत हमें उत्साह और प्रेरणा से परिपूर्ण करते हैं इसलिए दाऊद कहता है गाओ, वीणा

द्वारा लखिति स्□व. डॉ. वजिय लाल
मंगलवार, 21 नवम्बर 2006 18:52 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 14:58

बजाओ, डफली बजाओ, दस तार वाली सारंगी बजाओ, उसका गीत आनंद से गाओ□

भजन संहति 136 में वर्णन है, उन इस्रा□ली युवाओं की आन्□तरकि पीड़ा का जनि्□हें गुलाम बना कर बाबुल ले जाया जा रहा था, उनकी वीणा□ं उनके साथ थीं, वे बाबुल की नदयिों के तट पर बैठ ग□ और अपने वतन यरूशलेम को स्□मरण करके रो दयि –

बन्□दी बनाने वाले उत्□पीड़कों ने कहा –

“हमें सयि्योन का कोई गीत सुनाओ” पर वे कहते हैं “हमें रूलाने वाले हमसे आनंद मनाने को कहते थे□ हम परा□ वतन में, उस पीड़ा में, प्रभु का गीत कैसे गाते?”

पर कतिने अवसर हैं, पीड़ा के, आंसुओं के, जब गीत शक्त िऔर साहस और सम्□बल का स्□त्रोत बन जाते हैं□
इन दनिों मैं कार्ल लॉरेन्□स द्वारा लखिति अंग्रेजी पुस्□तक The Church in China का हनि्□दी अनुवाद कर रहा हूं□ माओ की तथाकथति क्रांत िके दनिों में चीन में मसीहयिों से बड़ा दुर्व्□यवहार हुआ, □क युवक की गवाही प्रस्□तुत है –
“1957 में मैंने वश्ि□ववद्यिालय में प्रवेश कयिा, यह वही वर्ष था जब दक्षणि पंथ वरिोधी आंदोलन प्रारम्□भ हुआ□ मसीही होने के कारण मेरी आलोचना की जाती, जब उनकी इच्□छा होती वे मुझे बीच में खड़ा कर देते और आलोचना सभा□ं आयोजति करते और मुझसे जरिह करते यद्यप िमैं वश्ि□ववद्यिालय प्रांगण में रह रहा था कनि्□तु मैं अकेला भोजन करता, अकेला ही अध्□ययन करता□”

□क संध्□या मैं बहुत ही अकेलापन महसूस कर रहा था और मैं बहुत उदास था□ मैं पास के □क पर्वत पर अचानक पहुंचा – मेरे मन में यह गीत आया – ‘नहीं, कभी अकेला नहीं’ –मैं धीमी आवाज़ से इस गीत को गाने लगा फरि तेज़ फरि और अधकि तेज़ मेरी आवाज़ हो गई, मेरा हृदय आनन्□द से भर गया□ मुझे ज्ञात था क,ि इस सब में, मेरा प्रभु मेरे साथ था□

बाद में 500 मील दूर मंचूरयिा प्रान्□त के □क कारखाने में मुझे भेज दयिा गया, वश्ि□ववद्यिालय की अपेक्षा कारखाने में मुझसे ज्□यादा बुरा व्□यवहार कयिा गया, वश्ि□ववद्यिालय में मैं मात्र आलोचना का पात्र था कनि्□तु कारखाने में मुझे क्रांत िवरिोधी बनाकर मेरी नन्ि□दा की जाती तथा मुझसे कठोर दुर्व्□यवहार कयिा जाता, यहां भी वही गीत मुझे तसल्□ली देता “नहीं, कभी अकेला नहीं□”

ये तो अतीत की बात हो गई अब भवषि्□य में क्□या है? □क बात नश्चिति है मैं जानता हूं मैं कभी अकेला नहीं रहूंगा□

कतिनी शक्त िहै गीतों में, कतिना साहस और सम्□बल वे प्रदान करते हैं, बुरे दनिों में, कुछ ऐसे गीत मन में तैरते हु□ होंठों पर आ जाते हैं जनिकी आवाज़ हमें दृढ़ता देती है□ कलीसयिाई इतहिास में इसलि□ ऐसे असंख्□य लोगों के वर्णन हैं जनि्□हें प्रताड़ति कयिा गया, □रीना में भूखे सहिों के बीच छोड़ा गया, आग में झुलसाया गया पर उन्□होंने गीत गाते–गाते मृत्□यु का आलगिंन कर लयिा□ मसीही, अंतमि संस्□कार के समय भी गीत गाते हैं, जो मृत्□यु के

सम्□बन्□ध में हमारे विश्□वास की अभिव्□यक्ति है□

आज बस यह कहूंगा, गीत हमारी आत्□मा से खिलते रहें, निकलते रहें –
हमारा विश्□वास, हमारा उल्□लास, हमारी आस, हमारे गीतों से अधिक अभिव्□यक्□त हो –
गीतों के शब्□द ऐसे हों जो हृदय को छू जा□ं –
संगीत ऐसा हो जो गीत के भाव की अभिव्□यक्ति में सक्षम हो –
प्रशंसा और महिमा के गीत ऊंचे आसमान में ईश्□वरता तक पहुंचें –
और जीवन संदेश के गीत युद्ध में भय से ग्रसित खाइयों में छिपी मानवता तक पहुंचें और जितना हम गा□ंगे कि संगीतमय संदेश से दूसरे समृद्ध हो जा□ं
उसी प्रक्रिया में हम भी समृद्ध होते जा□ंगे –
हमारा जीवन भी संगीत से भर जा□गा□